आलोचना से गायब हो रही है पठनीयता- नामवर सिंह

वन्दना राग कृष्ण प्रताप कथा सम्मान से व विनोद शाही डॉ.रामविलास शर्मा आलोचना सम्मान से सम्मानित

इलाहाबाद, 11सितम्बर, 2011. कृष्ण प्रताप कथा सम्मान एवं डॉ. रामविलास शर्मा आलोचना सम्मान समिति की ओर से इलाहाबाद संग्रहालय में आयोजित एक समारोह में शहीद कथाकार कृष्ण प्रताप की स्मृति में लेखिका वन्दना राग को उनके कथा संग्रह यूटोपिया के लिए प्रथम कृष्ण प्रताप कथा सम्मान, 2010 से तथा विनोद शाही को डॉ. रामविलास शर्मा आलोचना सम्मान, 2010 से सम्मानित किया गया।

दोनों ही सम्मान महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलाधिपति व सुप्रसिद्ध साहित्य समालोचक नामवर सिंह की अध्यक्षता और विश्वविद्यालय के कुलपति विभूति नारायण राय के मुख्य आतिथ्य संपन्न हुए। जहां वन्दना राग को सम्मानित करते समय वरिष्ठ साहित्यकार से.रा. यात्री, कवि दिनेश कुमार शुक्ल, चितरंजन सिंह मंचस्थ थे। वहीं विनोद शाही को उनके समग्र रचना कर्म के लिए सम्मानित करते वक्त फैजाबाद के रघुवंश मणि, रांची के रविभूषण मंचस्थ थे। आलोचक रविभूषण और कानपुर की ज्योति किरण ने वंदना राग पर चर्चा की और आलोचक रघुवंश मणि ने विनोद शाही के समग्र रचनाकर्म पर टिप्पणी की। नामवर सिंह अलग-अलग अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि आलोचना को पठनीय बनाने का प्रयास होना चाहिए। यह केवल परीक्षा पास करने और विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में पढ़ाने के लिए नहीं होनी चाहिए। डॉ.रामविलास शर्मा की आलोचना में देशी ठाठ दिखाई देता है। जबकि आज की आलोचना से पठनीयता गायब होती जा रही है। आज हिंदी साहित्य का स्तर उठा है लेकिन आलोचना का स्तर गिरता जा रहा है।

इस अवसर पर नामवर सिंह ने कवि शमशेर बहादुर सिंह द्वारा अपने पर कही बात का प्रसंग छेड़ते हुए कहा कि हमारी बातें ही बातें हैं, सैयद काम करता है। मेरे सैयद विभूति राय जी हैं। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से निकला हुआ आदमी विभूति जी ने तो जिन साहित्यिक प्रतिभाओं के लिए जगह नहीं थी, उनको जगह दी। कृष्ण प्रताप के नाम पर एक साहित्यिक पुरस्कार हो, ये कम बड़ी बात नहीं है। राजनीतिक परिस्थितियों पर भी चिंता जाहिर करते हुए उन्होंने कहा कि आज का दौर निराशाजनक है। संसद कस्बे का बाजार बनती जा रही है। इसे मंडी हाउस बनने से बचाना होगा। इसलिए जो जहां है वहीं से चिंगारी जलाये रखें।

सुप्रसिद्ध साहित्यकार से.रा.यात्री ने वन्दना राग की कहानियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उनकी संवेदना दलित, दमित की ओर है। उन्होंने कृष्ण प्रताप के कृतित्व की चर्चा करते हुए कहा कि कृष्ण प्रताप ने गद्य की भाषा और काव्य की भाषा में बहुत स्पष्ट अलगाव रखा है। सामाजिक कार्यकर्ता और कृष्ण प्रताप के साथी चितरंजन सिंह कृष्ण प्रताप को याद करते हुए कहा कि उनमें विचारों की प्रखरता व दृढता देखने को मिली। वे मानवीय गुणों से परिपूर्ण थे।

रविभूषण ने वंदना राग की रचनाधर्मिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वंदनाराग संवेदनशील व विचारवान लेखिका हैं, जो समय सीमा और मान्यताओं को ध्वस्त करते हुए चलती हैं। इनकी कहानियों में कस्बे से लेकर महानगर तक दिखाई देते हैं। इसके अलावा सत्ता, स्त्री, इतिहास के भी दर्शन होते हैं। आज का परिवेश इनकी रचनाओं मे मौजूद है। अपनी रचनाधर्मिता के बारे में बात करते हुए वंदना राग ने साम्प्रदायकिता को एक खौफनाक किरदार बताया। उन्होंने कृष्ण प्रताप के नाम से स्थापित सम्मान इलाहाबाद में मिलने पर हर्ष जताया। मुख्य अतिथि महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति विभूति नारायण राय ने कृष्ण प्रताप सम्मान के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हर वर्ष किसी महत्वपूर्ण रचना को यह सम्मान प्रदान किया जाएगा। इस दौरान कृष्ण प्रताप के कथा संग्रह कहानी अधूरी है का विमोचन भी किया गया। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विवि, वर्धा के इलाहाबाद केंद्र के प्रभारी प्रो. संतोष भदौरिया ने मंच का संचालन किया तथा नरेन्द्र पुण्डरीक व श्रीप्रकाश मिश्र ने आभार व्यक्त किया।